मरयिम, यीशु की माता (2 का भाग 1): मरयिम कौन है?

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: लेख तुलनात्मक धर्म मरयम

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं पैगंबरों की कहानियां

द्वारा: Aisha Stacey (© 2008 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

कई लोगों को यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि मरयिम इस्लाम में सबसे आदरणीय और सम्मानित महिलाओं में से एक है और क़ुरआन उन्हें बहुत महत्व देता है। मरयिम क़ुरआन के अध्याय 19 का नाम है, और अध्याय 3 अल-इमरान है, जिसका नाम उनके परिवार के नाम पर रखा गया है। इस्लाम इमरान के पूरे परिवार को बहुत सम्मान देता है। क़ुरआन हमें बताता है कि:

""वस्तुतः, ईश्वर ने आदम, नूह, इब्राहीम की संतान तथा इमरान की संतान को संसार वासियों में चुन लिया था।" (क़ुरआन 3:33)

ईश्वर ने आदम और नूह को अकेला चुना, लेकिन उन्होंने इब्राहीम और इमरान के परिवार को चुना।

"ये एक-दूसरे की संतान हैं।" (क़ुरआन 3:34)

इमरान का परिवार इब्राहिम के वंशजों से है, इब्राहिम का परिवार नूह के वंशजों से है और नूह, आदम के वंशजों से है। इमरान के परिवार में ईसाई परंपराओं में जाने-माने और सम्मानित कई लोग भी शामिल हैं - जैसे:- पैगंबर जकरिया और यह्या, पैगंबर और दूत यीशु और उनकी मां मरयिम।

ईश्वर ने मरयिम को संसार की सब स्त्रियों से ऊपर चुना है। ईश्वर ने कहा:

"और जब स्वर्गदूतों ने मरयम से कहाः हे मरयम! तुझे ईश्वर ने चुन लिया तथा पवित्रता प्रदान की और संसार की स्त्रियों पर तुझे चुन लिया।" (क़ुरआन 3:42)

अली इब्न अबू तालिब ने कहा:

"मैंने ईश्वर के पैगंबर को यह कहते हुए सुना कि इमरान की बेटी मरयिम महिलाओं में सबसे अच्छी हैं।" (सहीह अल बुखारी)

अरबी में मरयिम नाम का अर्थ है ईश्वर की दासी, और जैसा कि हम देखते हैं, यीशु की माँ मरयिम पैदा होने से पहले ही ईश्वर को समर्पित थी।

मरयिम का जन्म

बाइबल में मरयिम के जन्म का कोई विवरण नही है; हालाँकि, क़ुरआन हमें बताता है कि इमरान की पत्नी ने अपने अजन्मे बच्चे को ईश्वर की सेवा में समर्पित कर दिया था। मरयिम की माँ और इमरान की पत्नी, हन्ना [1] थी। वह पैगंबर जकारिया की पत्नी की बहन थीं। हन्ना और उसके पति इमरान को विश्वास था कि उनके कभी बच्चे नहीं होंगे, लेकिन एक दिन हन्ना ने ईश्वर से एक बच्चे के लिए भीख माँगते हुए एक ईमानदार और हार्दिक प्रार्थना की, और यह प्रतिज्ञा की कि उसकी संतान यरूशलेम में ईश्वर के घर में सेवा करेगी। ईश्वर ने हन्ना की विनती सुनी और वह गर्भवती हो गई। जब हन्ना ने गौरवशाली समाचार को महसूस किया तो उसने ईश्वर की ओर रुख किया और कहा:

"जब इमरान की पत्नी ने कहाः हे मेरे पालनहार! जो मेरे गर्भ में है, मैंने तेरे लिए उसे मुक्त करने की मनौती मान ली है। तू इसे मुझसे स्वीकार कर ले। वास्तव में, तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।" (क़ुरआन 3:35)

हन्ना ने जो ईश्वर से मन्नत मांगी थी उससे सीखने के लिए कुछ सबक हैं, जिनमें से एक हमारे बच्चों की धार्मिक शिक्षा की देखभाल करना है। हन्ना इस दुनिया के बारे में बिल्कुल नहीं सोच रही थी, वह यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रही थी कि उसका बच्चा ईश्वर के करीब और उसकी सेवा में रहे। ईश्वर के ये चुने हुए दोस्त, जैसे इमरान का परिवार, माता-पिता हैं, जिन्हें हमें अपना आदर्श मानना चाहिए। ईश्वर क़ुरआन में कई बार कहते हैं कि वह वही है जो हमारे लिए आपूर्ति करता है, और वह हमें और हमारे परिवार को नर्क की आग से बचाने के लिए चेतावनी देता है।

हन्ना ने अपनी याचना में कहा कि उसका बच्चा सभी सांसारिक कार्यों से मुक्त हो जाए। यह वादा करके कि उसका बच्चा ईश्वर का सेवक होगा, हन्ना अपने बच्चे की आज़ादी हासिल कर रही थी।

स्वतंत्रता जीवन का एक ऐसा गुण है जिसे प्राप्त करने का प्रयास प्रत्येक मनुष्य करता है, लेकिन हन्ना समझती थी कि सच्ची स्वतंत्रता ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण से आती है। यह वह है जो उसने अपने अभी तक अजन्मे बच्चे के लिए चाहा था। हन्ना चाहती थी कि उसका बच्चा एक स्वतंत्र व्यक्ति हो, किसी आदमी का गुलाम और कोई इच्छा ना हो, लेकिन केवल ईश्वर का दास हो। नियत समय में, हन्ना ने एक लड़की को जन्म दिया, उसने फिर से प्रार्थना में ईश्वर की ओर रुख किया और कहा:

"मेरे पालनहार! मुझे तो बालिका हो गयी, और नर नारी के समान नहीं होता- और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसे तथा उसकी संतान को धिक्कारे हुए शैतान से तेरी शरण में देती हूँ।" (क़ुरआन 3:36)

हन्ना ने अपने बच्चे का नाम मरियम रखा। ईश्वर के प्रति अपनी मन्नत के संदर्भ में, हन्ना ने अब खुद को एक दुविधा का सामना करते हुए पाया। प्रार्थना के घर में सेवा करना महिलाओं का कार्य नहीं था। मरियम के जन्म से पहले ही उनके इमरान की मृत्यु हो गई थी, इसलिए हन्ना ने अपने बहनोई, जकारिया की ओर रुख किया। उसने हन्ना को दिलासा दिया और उसे यह समझने में मदद की कि ईश्वर जानता था कि वह एक लड़की को जन्म देगी। मरियम सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ में से थी। पैगंबर मोहम्मद ने उल्लेख किया है [2] कि जब भी कोई बच्चा पैदा होता है तो शैतान उसे चुभता है और इसलिए बच्चा जोर से रोता है। यह मानवजाति और शैतान के बीच महान शत्रुता का संकेत है; हालाँकि इस नियम के दो अपवाद थे। मरियम की माँ की याचना के कारण शैतान ने न तो मरियम को और न ही उसके पुत्र यीशु को चुभाया।

जब मरियम के प्रार्थना सभा में जाने का समय आया, तो हर कोई इमरान की इस धर्मपरायण बेटी की देखभाल करना चाहता था। जैसा कि उस समय की प्रथा थी, पुरुषों ने विशेषाधिकार के लिए बहुत प्रयत्न किया, और ईश्वर ने सुनिश्चित किया कि उसका संरक्षक पैगंबर ज़करिया हो।

"तो तेरे पालनहार ने उसे भली-भाँति स्वीकार कर लिया तथा उसका अच्छा प्रतिपालन किया और ज़करिया को उसका संरक्षक बनाया।।" (क़ुरआन 3:37)

पैगंबर ज़करिया ने ईश्वर के घर में सेवा की और वह एक बुद्धिमान और ज्ञानवान व्यक्ति थे जो शिक्षण के लिए समर्पित थे। उनके पास मरियम के लिए एक निजी कमरा बनाया गया था ताकि वह ईश्वर की पूजा कर सके और अपने दैनिक कर्तव्यों को एकांत में कर सके। उसके अभिभावक के रूप में, पैगंबर ज़करिया प्रतिदिन मरियम से मिलने जाते थे, और वह उसके कमरे में ताजे फल देखकर हैरान रह जाते थे। ऐसा कहा जाता है कि सर्दियों में उन्हें गर्मियों के ताजे फल और गर्मियों में उन्हें सर्दियों के ताजे फल दिखते थे।[4] पैगंबर ज़करिया ने पूछा कि फल कहां से आये, जिस पर मरियम ने

उत्तर दिया, वास्तव में ईश्वर ने उसे जीविका प्रदान की थी। उसने कहा:

"ये ईश्वर के पास से आया है। वास्तव में, ईश्वर जिसे चाहता है, अगणित जीविका प्रदान करता है।" (क़ुरआन 3:37)

उस समय मरियम की ईश्वर के प्रति भक्ति अद्वितीय थी, लेकिन उसके विश्वास की परीक्षा होने वाली थी।

फुटनोट:

[1] इब्न कथीर के तफ़सीर से।

[2] सहीह अल-बुखारी।

[3] सहीह मुस्लिम।

[4] अल इमाम इब्न कथीर के काम के आधार पर पैगंबरों की कहानियां।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/1398

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।